क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 02 अंक: 34, मंगलवार, 26 फरवरी, 2019, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने के मुद्दे पर खोखली बात कर रहे हैं केजरीवाल: शीला दीक्षित

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता शीला दीक्षित ने रविवार को आरोप लगाया कि आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने के मुद्दे पर 'खोखली बातें' कर रहे हैं। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य की मांग को लेकर एक मार्च से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल करने की घोषणा की है। दिल्ली कांग्रेस की अध्यक्ष शीला दीक्षित ने कहा, 'केजरीवाल दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य के दर्जे के बारे में खोखली बातचीत कर रहे हैं और उनके वाक्तार्य से कुछ भी सामने आने वाला नहीं है। अगर वह दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य के दर्जे के बारे में गंभीर थे तो उन्हें चार साल पहले मुद्दा उठाना चाहिए था। वह आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुये पूर्ण राज्य का मुद्दा उठा रहे हैं।' आप पार्टी के मुखिया अरविन्द केजरीवाल और भाजपा के खोखले वायदों से त्रस्त दिल्लीवासी केन्द्र के साथ-साथ दिल्ली की सत्ता में भी बदलाव चाहते है।-शीला दीक्षित उन्होंने यह भी दोहराया कि दिल्ली कांग्रेस का रुख है कि वह लोकसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी (आप) के साथ गठबंधन नहीं करेगी। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा, 'केजरीवाल आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ आप के गठबंधन की बात कर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। लेकिन कांग्रेस अपने दम पर लोकसभा चुनाव लड़ेगी और दिल्ली में सभी सात सीटों पर जीत दर्ज करेगी।' महरौली और बदरपुर इलाकों में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि दिल्ली के लोग मुख्यमंत्री केजरीवाल और प्रधानमंत्री मोदी के 'खोखले वादों' से तंग आ गये हैं ।

ज्योति बोलीं- कभी सोचा नहीं था इतना सम्मान मिलेगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमारे काम की सराहना करते हुए कहा कि आपने अच्छा काम किया, मेला अच्छा हुआ, कहीं गंदगी नहीं मिली

प्रयागराज।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हाथों इतना बड़ा सम्मान (पांव पखारा जाना) पाकर सफाईकर्मी अभिभूत हैं और उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका प्रधानमंत्री ऐसे सम्मानित करेंगे। छत्तीसगढ़ के कोरबा की रहने वाली ज्योति ने बताया कि हमारा इतना सम्मान होगा, हम इतना गर्व महसूस करेंगे, कभी नहीं सोचा था। मैं इस मेले के लिए चार-पांच महीने से यहां काम कर रही हूं। प्रधानमंत्री से सम्मानित होने वाले होरी लाल ने कहा कि कभी नहीं सोचा था कि प्रधानमंत्री हमारे चरण धुलेंगे। प्रधानमंत्री ने हमारे काम की सराहना करते हुए कहा कि आपने अच्छा काम किया, मेला अच्छा हुआ, कहीं गंदगी नहीं मिली। बांदा के नरेश कुमार ने कहा कि हमने कभी नहीं सोचा था कि जीवन में ऐसा होगा। हम गंगा माई को इसके लिए धन्यवाद देते हैं। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पांच सफाईकर्मियों (दो महिला और तीन पुरुष) के चरण धुल कर उन्हें अंगवस्त्र भेंट किया और कुम्भ मेले में बेहतर साफ सफाई के लिए उनकी सराहना की।

हिन्दुस्तान का एकलौता नेता है मोदी जो पाकिस्तान को देगा मुंहतोड़ जवाब: शाह

कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्षी गठबंधन पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा कि वे (विपक्षी गठबंधन) देश की भलाई के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं

जम्मू।

भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने जम्मू कश्मीर की मौजूदा स्थिति के लिए रविवार को कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही केवल एक ऐसे नेता हैं जो पूरी क्षमता के साथ पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दे सकते हैं और देश को आगे ले जा सकते हैं। शाह ने भाजपा के बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं की एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, 'देश विभिन्न सुरक्षा मुद्दों का सामना कर

रहा है...केवल मोदी ही देश को सुरक्षा दे सकते हैं और इसे आगे ले जाकर एक विश्व शक्ति बना सकते हैं और उनमें पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने की क्षमता है।' कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्षी गठबंधन पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि वे (विपक्षी गठबंधन) देश की भलाई के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं इस गठबंधन से यह पूछकर थक गया हूं कि उनका नेता कौन है। वे मुझे जवाब नहीं दे रहे हैं लेकिन जनता को उनसे पूछना चाहिए कि उनका नेता कौन है और उनकी नीतियां क्या हैं?' शाह ने कहा, 'उनका कोई नेता नहीं है और कोई नीति नहीं है और इस तरह का गठबंधन देश का भला नहीं कर सकता है। यह उन लोगों का समूह है जो वंशवादी राजनीति में हैं और वे अपने स्वयं के परिवारों के लिए एक साथ आए हैं और वे केवल अपने राजनीतिक हितों की रक्षा कर रहे हैं।' उन्होंने कहा कि देश विभिन्न सुरक्षा मुद्दों का सामना कर रहा है और उन्होंने पूछा कि क्या यह 'गठबंधन' देश को सुरक्षित कर सकता है। शाह ने कहा, 'हम मजबूर सरकार नहीं चाहते हैं बल्कि 'मजबूत सरकार' चाहते हैं। यदि भारत को विश्व शक्ति बनना है तो आगामी चुनावों में सत्ता में लाने के लिए मोदी को वोट करें।' कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, 'राहुल बाबा ने जम्मू कश्मीर की स्थिति के बारे में सवाल उठाये थे।

तमिलनाडु में डबल इंजन से होगा डबल विकास: पीयूष गोयल

चेन्नई।

रेलमंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि केंद्र में उनकी पार्टी की सरकार और तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक की सरकार ''दोहरे इंजन'' की तरह है जिससे विकास की गति दोहरी होना सुनिश्चित हुआ है। उन्होंने उपमुख्यमंत्री ओ पन्नीरसेल्वम के उस बयान से सहमति प्रकट की जिसमें उन्होंने कहा कि अगर केंद्र और राज्य मिलकर काम करते हैं तो लोगों को फायदा पहुंचता है। उन्होंने कहा कि इससे प्रगति दोहरी हो जाती है। वह तमिलनाडु में प्रधानमंत्री की 'किसान सम्मान निधि' योजना शुरू होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'जब केंद्र और राज्य

सरकारें दोस्तों की तरह काम करती हैं, तो आप दोहरी प्रगति और प्रगति की दोहरी गति देखते है।' उन्होंने कहा, 'आप सभी जानते हैं कि अगर एक ट्रेन में डबल इंजन लगा दिये ताएं तो ट्रेन तेज चलने लगती है।' रेलमंत्री ने श्रोताओं से सवाल करते हुये कहा कि क्या वे तमिलनाडु के लिए दोहरा इंजन चाहते हैं तो वहां मौजूद लोगों ने इसका जवाब हां में दिया। इससे उत्साहित गोयल ने कहा कि आपके, किसानों, तमिलनाडु के लोगों और अम्मा (दिवंगत जयललिता) के आशीर्वाद से लोगों के बेहतर भविष्य के लिए काम होगा। मुख्यमंत्री के पलानीस्वामी ने किसान सम्मान निधि योजना की प्रशंसा करते हुये कहा कि इससे राज्य के 22 लाख से अधिक छोटे किसानों को फायदा होगा। इसके लिए 277 करोड़ रूपये की राशि का इंतजाम कर दिया गया है। केंद्र ने इस योजना के तहत किसानों के लिए दो हजार रूपये वाली पहली किस्त जारी कर दी है। पन्नीरसेल्वम ने इस अवसर पर कहा जब केंद्र और राज्य सरकारें मिलजुल कर काम करती हैं तो इससे लोगों को बहुत फायदा होता है।

PRC समिति की सिफारिशों को किया नामंजूर, अरुणाचल सरकार में हिंसक विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली।

अरुणाचल प्रदेश में हिंसक विरोध प्रदर्शन के बीच, केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने रविवार को कहा कि राज्य सरकार ने छह समुदायों को स्थायी निवासी प्रमाण पत्र (पीआरसी) देने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति की सिफारिशों को स्वीकार नहीं करने का फैसला किया है और उन्होंने कांग्रेस पर लोगों के एक वर्ग को ''भड़काने'' का आरोप लगाया। रिजिजू ने अलग-अलग ट्वीट में कहा कि अरुणाचल प्रदेश सरकार ने नमसाई और चांगलांग जिलों में रह रहे छह समुदायों को पीआरसी दिये जाने संबंधी संयुक्त उच्चाधिकार प्राप्त समिति की सिफारिशों को स्वीकार नहीं किये का एक आदेश पारित किया है। राज्य की राजधानी ईटानगर और अन्य

स्थानों पर व्यापक हिंसा होने की खबर है जिससे कम से कम दो लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गये। संपत्तियों और वाहनों को भी नुकसान पहुंचा हैाकेन्द्र सरकार ने कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बनाये रखने के लिए प्रशासन की मदद के वास्ते अर्धसैनिक बलों के एक हजार जवानों को राज्य में भेजा है। रिजिजू ने कहा, ''सभी को शांति के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण किए बिना एकजुट होना चाहिए। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंसा में निर्दोष लोगों की जान चली केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री रिजिजू ने कांग्रेस पर छह समुदायों को स्थायी निवासी प्रमाण पत्र दिये जाने के कदम के खिलाफ प्रदर्शन करने के वास्ते राज्य के लोगों को ''भड़काने'' का आरोप लगाया। रिजिजू ने कहा कि मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने स्पष्ट किया है कि राज्य सरकार पीआरसी पर विधेयक नहीं ला रही है और उसने केवल नबाम रेबिया की अध्यक्षता वाली एक समिति की रिपोर्ट को पेश किया है। उन्होंने कहा, ''इसका मतलब यह है कि राज्य सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया है। वास्तव में, कांग्रेस पीआरसी के लिए लड़ रही है लेकिन लोगों को गलत तरीके से उकसा रही है।''रेबिया राज्य सरकार में एक कैबिनेट मंत्री है। रिजिजू ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने पीआरसी के वास्ते लड़ने के लिए लेकांग क्षेत्र में गैर-अरुणाचल प्रदेश एसटीएस का समर्थन किया और ''उकसाया'' है, लेकिन ईटानगर में निर्दोष लोगों को ''गुमराह'' किया। उन्होंने कहा, ''शुरू से ही मैंने राज्य सरकार से जोर देकर आग्रह किया है कि जब तक लोग स्थानीय लोगों के अधिकारों की पूर्ण सुरक्षा के प्रति आश्वस्त नहीं हो जाते, हमें पीआरसी नहीं देना चाहिए।

पुलवामा हमले पर बोले राज ठाकरे, डोभाल से पूछताछ करने पर सामने आएगी सच्चाई

कोल्हापुर। पुलमावा आतंकी हमले में शहीद हुए सीआरपीएफ के जवानों को राजनीतिक शिकार करार देते हुए मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने रविवार को दावा किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल से पूछताछ करने पर सच्चाई सामने आ जाएगी। ठाकरे ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में कहा, 'यदि एनएसए डोभाल से पूछताछ की जाती है तो पुलवामा आतंकी हमले की सच्चाई सामने आ जाएगी।' उन्होंने कांग्रेस के आरोपों से सहमति जताते हुए कहा कि पुलवामा हमले के वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कॉरबेट नेशनल पार्क में एक फिल्म की शूटिंग करने में व्यस्त थे। आतंकी हमले की खबरें आने के बाद भी उनकी शूटिंग जारी रही। मनसे प्रमुख ने कहा कि पुलवामा हमले में शहीद हुए 40 जवान राजनीतिक शिकार बने और हर सरकार ने इस तरह की चीजें गढ़ीं, लेकिन मोदी के शासन में यह अक्सर हो रहा है। वहीं, प्रदेश भाजपा प्रवक्ता माधव भंडारी ने कहा, 'राज ठाकरे अपने पूरे करियर में नकल उतारते रहे हैं। अब वह डोभाल के खिलाफ आरोप लगा कर राहुल गांधी का अनुकरण रहे हैं।'

भाजपा की नीतियों के चलते ठगा हुआ महसूस कर रहे किसान: अखिलेश यादव

लखनऊ। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि केन्द्र सरकार की किसानों को 6 हजार रूपए प्रतिवर्ष मदद देने की घोषणा उनके साथ धोखा है। इससे किसान को 17 रूपए प्रतिदिन मिलेगा, जबकि न्यूनतम मजदूरी 150 रूपए है। रविवार शाम जारी एक बयान में अखिलेश ने दावा किया कि भाजपा सरकार की 'कुनीतियों' के चलते न केवल लोग दहशत में हैं अपितु किसान भी अपने को अपमानित तथा ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। खेती का लागत मूल्य लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज हमारा किसान बड़े पैमाने पर सरसों पैदा कर रहा है लेकिन सवाल यह है कि क्या उसे

फसल का उचित मूल्य मिल सकेगा? केन्द्र विदेशों से तेल मंगा रहा है तो प्रदेश का किसान क्या सही कीमत पाएगा? आलू किसान को कुछ नहीं मिला? मक्का किसान खरीद केन्द्र ढूंढता रह गया। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने किसानों को 6 हजार रूपए प्रतिवर्ष मदद देने की जो घोषणा की है वह किसानों के साथ धोखा है। इस तरह तो किसान को 17 रूपए प्रतिदिन मिलेगा जबकि न्यूनतम मजदूरी 150 रूपए है। यह किसान के साथ छलावा और उसके सम्मान के साथ खिलवाड़ है। भाजपा सरकारों की न तो प्रशासन और किसानों की आय बढ़ाने में कोई रुचि है और नहीं उसके पास विकास की कोई दृष्टि नहीं है। जब तक देश की नीति नहीं बनेगी तब तक खेती और खेती से जुड़े कारोबार से फायदा नहीं होगा। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान देश का अन्नदाता है। आज वह सरकार की नीतियों की वजह से कर्ज और सूद में जकड़ा हुआ है। अभी झांसी में एक किसान ने आत्महत्या कर ली। किसान का संकट राष्ट्रीय संकट है। इसका समाधान होना चाहिए। वैसे भी किसान अब भाजपा की नीति और नीयत से बखूबी वाकिफ हो चुका है।

रिटायर्ड आईपीएस ऑफिसर ने सुसाइड नोट में लिखा ममता का नाम, विपक्ष हमलावर

कोलकता।

रिटायर्ड आईपीएस ऑफिसर गौरव चंद्र दत्त की तरफ से 19 फरवरी को गई कथित खुदकुशी मामले में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी विपक्षी दलों के निशाने पर आ गई है। 1986 बैच के रिटायर्ड आईपीएस ऑफिसर गौरव चंद्र दत्त करीब एक दशक तक कंपल्सरी वेट के बाद 31 दिसंबर 2018 को रिटायर कर गए थे। रिटायर्ड ऑफिसर ने आठ पेज का एक नोट लिखने के बाद अपनी कलाई की नस काट ली। इन नोट में उन्होंने लिखकर यह सिस्टम पर आरोप लगाया कि उन्हें बिना सही तरीके से सुनावई के 10 साल तक सजा दी। हिन्दुस्तान टाइम्स के पास मौजूद एक कॉपी है जो दत्त ने मुख्यमंत्री को लिखा था। इसमें कहा गया- ÷लगातार टॉर्चर और अपमान ने मुझे यह कदम उठाने पर मजबूर किया है।÷ बीजेपी के राष्ट्रीय सचिव राहुल सिन्हा ने कहा कि वह केन्द्रीय गृह मंत्रालय से इस बात का अनुरोध करेंगे कि इस बात की गहन जांच कराए कि आखिरकार क्यों राज्य सरकार ने दत्त के खिलाफ दस साल तक विभागयी जांच कराए। सिन्हा ने कहा- ÷वह राजनीतिक बदले का शिकार हुए हैं क्योंकि बाकी सहकर्मियों की तरह हो सकता है कि वो हां में हां न मिलाते हों।÷ एक समय ममता बनर्जी के सबसे विश्वासपात्र रहे मुकुल रॉय ने मुख्यमंत्री के खिलाफ खुदकुशी के लिए उकसाने का केस दर्ज करने की मांग की है। गौरतलब है कि गौरव दत्त की खुदकुशी का एक नोट पर सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। जिसमें उन्होंने ममता बनर्जी पर उन्हें %कंपल्सरी वेटिंग% पर डालकर उन्हें खुदकुशी के लिए उकसाने का आरोप लगाया है। 31 दिसंबर को रिटायर होने के बाद भी उन्हें उनका ड्यूज नहीं दिये गए। हालांकि यह सुसाइड नोट सोशल मीडिया पर वायरल कैसे हुआ, इसका पता नहीं चल पाया है। मंगलवार को जब उनकी पत्नी साल्ट लेक स्थित घर पहुंचीं तो उन्हें खून से लथपथ पाया। उनकी हाथ की नसें कटी थीं। गौरव दत्त को तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी जान बचाई नहीं जा सकी।

बिहार: विपक्षी गठबंधन से अलग राह चली BSP, सभी सीटों पर उतारेगी प्रत्याशी

पटना। बसपा की प्रदेश इकाई ने बिहार में विपक्षी दलों के गठबंधन से अलग राह पर चलने का निर्णय ले लिया। अब पार्टी सभी 40 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। वह बिहार में सर्वसमाज के सम्मान में, बहन जी मैदान में के नारे के साथ सर्व समाज को पार्टी से जोड़ने की कोशिश करेगी। बसपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. लाल जी मेधंकर ने रविवार को जारी विज्ञप्ति में कहा कि बसपा अध्यक्ष मायावती ने बिहार के लिए लोकसभा चुनाव, 2019 के संदर्भ में दिशा-निर्देश जारी किया है। इसके अनुसार पार्टी सभी 40 सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगी। पूरे प्रदेश में बसपा का जनाधार व सक्रियता बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। सामाजिक, राजनीतिक दृष्टिकोण व जातिगत भागीदारी को ध्यान में रखते हुए सभी सीटों पर उम्मीदवारों का चयन किया जा रहा है। इस संबंध में पार्टी प्रमुख मायावती ने 28 फरवरी को दिल्ली स्थित अपने आवास पर बिहार के प्रमुख संगठन पदाधिकारियों एवं लोकसभा क्षेत्र के उम्मीदवारों की बैठक बुलायी है।

राममंदिर निर्माण मामले में बोलीं निर्मला सीतारमण, सरकार पर रखिए विश्वास

सीतारमण ने पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों से कहा कि उन्हें इस मुद्दे पर शिकायत नहीं करनी चाहिए क्योंकि भारत में वास्तविक काम हो रहा है

बेंगलूरू।

रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण ने रविवार को कहा कि लोगों को राम मंदिर और अन्य मुद्दों पर भाजपा से बहुत ज्यादा उम्मीदें हैं और उन्हें मोदी सरकार पर भरोसा रखना चाहिए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि लोगों को मंदिर का निर्माण नहीं करने के लिए भाजपा को दंडित नहीं करना चाहिए। सीतारमण ने पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों से कहा कि उन्हें इस मुद्दे पर शिकायत नहीं करनी

चाहिए क्योंकि भारत में वास्तविक काम हो रहा है। देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को खोना वहन नहीं कर सकता। रक्षामंत्री ने थिंकर्स फोरम द्वारा आयोजित संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राम मंदिर का जिक्र किया और कहा कि लोगों को इसका निर्माण नहीं करने के लिए भाजपा को दंडित नहीं करना चाहिए। रक्षामंत्री ने कहा, 'आपकी उच्च स्तर की उम्मीदों का इस्तेमाल इस चुनाव के लिए नहीं होना चाहिए, इस तरह कह कर कि नहीं-नहीं, आपने अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण नहीं किया। उन्होंने कहा कि मंदिर नहीं बनाए जाने की वजह से हमें दंडित न करें। मैं यह उदाहरण इसलिए दे रही हूं क्योंकि यह मेरे दिल के बहुत करीब है। सीतारमण ने कहा, '...सरकार का रुख देखिए। हम उच्चतम न्यायालय गए हैं और कहा है कि हमें जमीन दीजिए। वहां मुद्दे हैं...सरकार पर विश्वास रखिए। विश्वास रखिए।' केंद्र सरकार 29 जनवरी को उच्चतम न्यायालय पहुंची थी और विवादित स्थल के आसपास की अधिगृहीत की गई 67 एकड़ अविवादित जमीन वास्तविक स्वामियों को लौटाने की अनुमति मांगी थी। कार्यक्रम में एक प्रतिभागी ने पूछा कि भारत पुलवामा आतंकी हमले के बाद वैसी कार्रवाई कयों नहीं कर सकता जैसी अमेरिका ने पाकिस्तान के भीतर ओसामा बिन लादेन के खिलाफ की थी। इस पर रक्षामंत्री ने कहा कि इसे अच्छी तरह देखा गया है, अच्छी तरह समझा गया है और यह अच्छी तरह से ध्यान में है। उन्होंने कहा, 'मैं यकीन के साथ कह सकती हूं कि इसे अच्छी तरह ध्यान में रखा गया है। मैं रेखांकित करती हूं कि इसे अच्छी तरह ध्यान में रखा गया है।' सीतारमण ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा और जो पुलवामा आतंकी हमले के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जिम्मेदार हैं, उन्हें भारी कीमत चुकानी होगी।

संपादकीय

सही दिशा में सरकार

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का यह वक्तव्य काफी गंभीर है कि भारत ने सिंधु जल संधि के तहत नदियों से अपने हिस्से का पानी पाकिस्तान जाने से रोकने का फैसला किया है। पाकिस्तान के लिए इस फैसले के निहितार्थ काफी गहरे हैं। जब भी बड़े आतंकवादी हमले हुए और पाकिस्तान का नाम आया, भारत में यह मांग निश्चित उठती थी कि उसकी ओर जाने वाली नदियों का पानी रोक दिया जाए। गडकरी का ट्विट साबित करता है कि सरकार ने केवल फैसला नहीं किया, इस पर काम भी शुरू है। भारत ऐसा कर पाया तो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था और सामान्य जीवन के लिए बहुत बड़ा धक्का होगा। गडकरी के वक्तव्य में वाकई पानी रोकने के लिए पूरी कार्ययोजना का विवरण है। इसमें कहा गया है कि हम पूर्वी नदियों की धारा

को बदल देंगे और उसे जम्मू-कश्मीर और पंजाब में अपने लोगों तक पहुंचाएंगे। इसके लिए बांध बनाने की दिशा में कार्रवाई आरंभ हो गई है। निस्संदेह, फैसले को पूरी तरह अमल में लाने में कई वर्ष लग सकते हैं। आखिर जल का प्रवाह रोकने के लिए 100 मीटर की ऊंचाई वाले बांध बनाने होंगे। किंतु रावी नदी पर शाहपुर कांडी में बांध का निर्माण शुरू हो चुका है। इसके अलावा, यूजेएच परियोजना में भारत के हिस्से का पानी जमा किया जाएगा और उसका इस्तेमाल जम्मू-कश्मीर के लिए होगा। शेष बचा पानी दूसरी रावी-व्यास लिंक के जरिये देश के अन्य हिस्सों में पहुंचाया जाएगा। 1960 की सिंधु जल संधि के तहत पश्चिम की नदियों-सिंधु, झेलम और चेनाब-का जल पाकिस्तान को दिया गया, जबकि पूर्वी नदियों-रावी, ब्यास और सतलुज-का जल भारत को दिया गया। बावजूद इसके भारत से रावी ब्यास और सतलुज का पानी पाकिस्तान में जा रहा है। जब 2016 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक भाषण में कहा था कि खून और पानी एक साथ नहीं बहेंगे तो उसे कम ही लोगों ने गंभीरता से लिया था। पाकिस्तान की पन बिजली और सिंचाई परियोजनाएं इन नदियों के पानी पर भी निर्भर हैं। इसलिए इसका सीधा असर होगा। वास्तव में पाकिस्तान का 47 प्रतिशत हिस्सा प्रभावित होगा। जो देश हमारे प्रति बिल्कुल संवेदनशील नहीं, उसके प्रति हम संवेदनशील क्यों रहें? पूरा देश इस फैसले का स्वागत करेगा। पाकिस्तान को सबक देने के कई कदमों में यह स्थायी महत्व का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण कदम होगा।

राखीगढ़ी की चिंता

हिसार जिले में स्थित राखीगढ़ी में घुसते ही गंभीर लापरवाही दृष्टिगोचर होती है। यह हड़प्पा सभ्यता के समकालीन पुरातात्विक स्थल है, जो तकरीबन 550 एकड़ में विस्तारित और मोहनजोदड़ो से भी बड़ा है; भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने 1997 से 2000 के बीच की खुदाई में एक बहुत ही सुनियोजित शहर खोज निकाला, जो कि सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे पुराने साक्ष्यों वाला लगभग 5000 वर्ष पुराना शहर था। लेकिन दुर्भाग्य से राखीगढ़ी की खुदाई अभिशप्त ही रही। पहले उत्खनन व संरक्षण में धन के दुरुपयोग के आरोप, तत्पश्चात सीबीआई की जांच और उचित सुरक्षा न होने के कारण लोगों द्वारा यहां से कीमती सामानों की लूटपाट के चलते स्थल सुर्खियों में रहा। डेक्कन कॉलेज पुणे ने हरियाणा के पुरातत्व विभाग के साथ मिलकर 2013 से 2016 के बीच मनुष्यों व जानवरों के कंकाल प्राप्त किए। इन कंकालों के डीएनए अध्ययन से हमारे विकास के बारे में पता चल सकता है, यह भी कि यहां के निवासी आर्य थे, द्रविड़ थे, वैदिक थे या मिश्रित पूर्वजों की जाति यहां निवास करती थी। एक बहस की गुंजाइश कि भारत की सभ्यता व विज्ञान की क्षमता क्या थी। पक्की सड़कों के सबूत, ड्रेनेज सिस्टम, टेराकोटा, ईंटें, ज्वेलरी, मूर्तियां, कीमती पत्थर व नग और जल संरक्षण की तकनीक सभी मिलकर गवाही देते हैं कि कांस्य युग में यहां के निवासी मिस्र और अन्य समकालीन सभ्यताओं से कहीं आगे थे। दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज इस खोए हुए शहर के उज्ज्वल इतिहास को प्राप्त करने के बाद भी संरक्षित नहीं किया गया। यहां तक कि 2012 में ग्लोबल हेरिटेज फंड द्वारा इसे एशिया के 10 सबसे असुरक्षित पुरातात्विक साइट में गिना गया। जबकि हमारे पूर्वजों की पहचान और उसके आधार पर विकसित होता हमारा भविष्य, इन सब का जवाब हमें इस साइट से मिल सकता है। परंतु सरकारी लापरवाही से हम अपने इतिहास को धीरे-धीरे खो रहे हैं। ऐसे हम अपनी अमूल्य ऐतिहासिक पहचान की कई अनमोल कड़ियां खो देंगे।

ओशो

सत्य

अपना अनुभव ही सत्य है और इसके अतिरिक्त कुछ भी सत्य नहीं है। जिस बोलने के साथ यह आग्रह होता है कि मैं कहता हूं, उस पर इसलिए विास करो क्योंकि मैं कहता हूं। जिस बोलने के लिए श्रद्धा की मांग की जाती है-अंधी श्रद्धा की वह, बोलना उपदेश बन जाता है। मेरी न तो यह मांग है कि मैं कहता हूं उस पर आप विास करें। न ही मेरा यह कहना है कि जो मैं कहता हूं वही सत्य है। इतना ही मेरा कहना है कि किसी के भी कहने के आधार पर सत्य को स्वीकार मत करना, और मेरे कहने के आधार पर भी नहीं। सत्य तो प्रत्येक व्यक्ति की निजी खोज है। कोई दूसरा किसी को सत्य नहीं दे सकता। मैं भी नहीं दे सकता हूं, कोई दूसरा भी नहीं दे सकता है। सत्य दिया नहीं जा सकता, पाया जरूर जा सकता है। इसलिए मैं जो कह रहा हूं, उससे आपको कोई सत्य ही दिखा दे रहा हूं, ऐसा नहीं है। फिर पूछा है कि उपदेश क्यों दे रहा हूं? न ही इसमें मुझे कोई आनंद उपलब्ध होता है कि आप जो मैं कहूं, प्रशंसा करें, उसके लिए तालियां बजाए, उसका समर्थन करें। न ही मेरा यह कोई व्यवसाय है। फिर मैं क्यों कुछ बातें कह रहा हूं। एक आदमी को दिखाई पड़ता हो कि आप जिस रास्ते पर जा रहे हैं वह रास्ता गड्ढों में कांटों में ले जाने वाला है और आपसे कह दे कि इस रास्ते पर कांटे हैं और गड्ढे हैं। वह आपको कोई उपदेश नहीं दे रहा है। वह केवल इतना कह रहा है कि जिस रास्ते से मैं परिचित हूं उस रास्ते पर उसी गड्ढेमें उन्हीं कांटों से किसी को जाते हुए देखना अमानवीय है, चुपचाप देख लेना अमानवीय है, अत्यंत हिंसक कृत्य है। सड़क के किनारे प्रकाश के खंभे लगे हुए हैं, स्ट्रीट लाइट लगे हुए हैं। जिस आदमी ने सबसे पहले फिल्डेल्फिया में सबसे पहला रास्ते के किनारे का प्रकाश लगाया, वह था बेंजामिन फ्रेंकलिन। बेंजामिन ने सबसे पहले अपने घर के सामने एक बत्ती लगायी, एक खंभा लगाया। पड़ोस में लोगों ने कहा, क्या तुम यह दिखलाना चाहते हो कि तुम्हारे पास पैसे हैं? तुम्हारे घर में बड़ा प्रकाश है? यह प्रकाश किसलिए लगाना चाहते हो? बेंजामिन ने कहा, कि नहीं, रास्ते पर ऊबड़-खाबड़ पत्थर हैं, रात में यात्री भटक जाते हैं, कोई गिर भी जाता है, रास्ता खोजना मुश्किल हो जाता है। इसलिए मैं एक प्रकाश लगाता हूं कि राह चलने वाले लोगों को मेरे घर के सामने के पत्थर तो दिखाई पड़े, कोई उनसे टकरा न जाए और न गिर जाए।

संकट के दोराहे पर हैं आदिवासी

> कश्मीर को इस मोड़ तक पहुंचाने वाले बाहरी-भीतरी अनगिनत कारणों में एक बुनियादी और बड़ा कारण है कश्मीर की राजनीति का ''मुस्लिम राष्ट्रवादी' गुप्त एजेंडा, जिस पर हमारे देश में बोलने का चलन नहीं है। लोग यहां हिंदुत्व, हिंदू राष्ट्रवाद, हिंदू साम्प्रदायिकता, भगवा आतंकवाद पर तो रात-दिन चिल्ला-चिल्ला कर भर्त्सना करते मिलेंगे पर उसी अनुपात और तेवर के साथ शायद ही कोई बुद्धिजीवी, वामपंथी विचारक, विश्लेषक, कवि, लेखक, पत्रकार मिलेगा जो भूले से भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पाकिस्तानपरस्ती, मुस्लिम राष्ट्रवाद और अलगाववाद पर बोला हो या बोलने के लिए तैयार हो

अग्निशेखर

जानते हैं कि देश का विभाजन मुख्य रूप से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर हुआ, लेकिन कम लोग जानते हैं कि कश्मीरी अलगाववाद उसी विभाजन की अधूरी रह गई लड़ाई का हिस्सा है। ऐसा वरिष्ठ अलगाववादी और तहरीक-ए-हुर्रियत के कश्मीरी नेता सैयद अलीशाह गिलानी कई बार बोल चुके हैं। आप उनके इन उद्घोषों को अनसुना न करें-हम पाकिस्तानी हैं, पाकिस्तान हमारा है' या ''यहां सेक्युलरइज्म नहीं चलेगा, नैशनलिज्म नहीं चलेगा, समाजवाद नहीं चलेगा..यहां सिर्फ और सिर्फ इस्लाम चलेगा'। इन्हीं साहब का यह भी कहना है-''यह लड़ाई आजादीबराए इस्लाम' है यानी यह आजादी की लड़ाई इस्लाम के लिए है। एक यही नेता हैं, कश्मीर में जो साफगोई से बात करते हैं। बाकी सब घूमा-फिरा कर बात करके गुमराह करने वाले शातिर लोग हैं। अन्य अलगाववादी कश्मीर को विवादित बताएंगे। जनमत-संग्रह कराने या राष्ट्र संघ का प्रस्ताव लागू कराने की मांग से इसे जोड़कर भारत राष्ट्र पर वादाखिलाफी का आरोप लगाएंगे। नेशनल कान्फ्रेंस, पीडीपी आदि मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियां इसके विलय को भारतीय संविधान की धारा 370 और आजकल 35-ए की शर्त (?) के साथ जोड़कर दलीलें देंगे। नेशनल कान्फ्रेंस आटोनॉमी की बहाली और पीडीपी सेल्फ रूल, विसैन्यीकरण आदि की मांग से अवगत कराएगी। परंतु आपको समझने में देर नहीं लगेगी कि सारी राजनीति मुस्लिम बहुल अस्मिता केंद्रित है, जिसे चालू मुहावरे में ''कश्मीरियत' कहकर पेश किया जाता है। यह कश्मीरियत अतीत बन चुकी एक दिवंगत अवधारणा है।रहस्यवादी संत कवि अहद जरगर, स्वछ काल से लेकर महजूर और दीनानाथ नादिम तक का कश्मीर आज वहां नहीं है। कभी महजूर ने अपनी एक कविता में दंगे फसाद छोड़कर आपसी सौहार्द की वकालत करते हुए हिंदू को शक्कर और मुसलमान को दूध की तरह परस्पर घुल-मिलकर शरबत की तरह रहने की बात की थी। यह अलग कि उन्हीं महजूर का यह अंतर्विरोधी काव्यांश ''जुव जान वंदहा हा हिन्दोस्तानस, दिल छुम पाकिस्तानस सीथ' अर्थात जी जान न्योछावर हिन्दुस्तान पर/दिल मेरा है पाकिस्तान के साथ' भी समाज में समानांतर चलता रहा। आज वहां अब्दुल अहद आजाद जैसा कोई कवि नहीं जिसने बआवाज बुलंद कहा था-''गीता की मुझे खता बताओ, ओकुरआन वाले!' यह ऐसा ही भावबोध हुआ करता था जो कभी कश्मीर के जनजीवन का पायदान हुआ करता था। इसे अपवादों के बावजूद आप कश्मीरियत कह सकते थे। आज वही कश्मीरियत ढकोसला है। इस्लामियत का मुखौटा है। महजूर के कथित शक्कर से आज वहां सबको परहेज है। कश्मीरी पंड़ितों से विहीन कर दिया गया कश्मीर आज ''मुस्लिम कश्मीर' में बदल दिया गया है। इसे ''इस्लामी राज्य' में बदलने में संबंधित लोग आमादा हैं। इसमें धारा 370 ने खाद-पानी मुहैया किया है। कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत के हवाले देने वाले राजनीतिक निहितार्थ के

लोग हैं। अलगाववाद के नाम पर कश्मीर में चल रहे जिहादी आतंकवाद की दृष्टि से देखें तो आज कश्मीर लगभग सीरिया में बदल कर गजवाए-हिन्द परगामजन है। इसकी नजर अब हिंदू बहुल जम्मू प्रांत को रौंदकर आगे निकल दिल्ली के लालकिले पर है। उनका तराना है ः ''जाग उठो अहलेकश्मीर/हाथों में लेकर श्मशीर/बदलो जम्मू की तकदीर/जागो जागो सुबह हुई।' कश्मीरी अलगाववादियों के इस तथाकथित आजादी के तराने में जम्मू की तकदीर बदलने का स्पष्ट आह्वान है, जिसके निहितार्थ जम्मू-कश्मीर की अलगाववादी राजनीति के पंडित अच्छी तरह से समझते हैं। हालांकि मुस्लिम बहुल कश्मीर के बाहर हिंदू बहुल जम्मू प्रांत की आबादी के अनुपात के चलते उसके दबाव को कम करने का प्रशासनिक खेल शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने साठ के दशक से ही खेलने के संकेत देने शुरू किए थे यानी जम्मू प्रांत के कश्मीर घाटी से लगते मुस्लिम बहुल पहाड़ी क्षेत्रों को ''ग्रेटर कश्मीर' से जोड़कर देखना। उनका इशारा डोडा, किश्तवाड़, रामबन, पुंछ, राजौरी की तरफ था। इसीलिए उन्होंने जम्मू को ''ढाई जिला' वाला प्रांत कहना शुरू किया जो आज योजनाबद्ध तरीके से लगभग बन भी चुका है। आज मुस्लिम बहुल डोडा जिला के अंतर्गत आने वाले इलाके को ''चिनाब वैली' और बाकी जगहों को ''पीर पंचाल जोन' कहा जाने लगा है अर्थात समूचा जम्मू अब तीन क्षेत्रों में बांट दिए जाने की कगार पर है। देखा जाए तो डोडा भू-भाग को चिनाब वैली कहना हास्यास्पद है। पता नहीं कि उसे किस परिभाषा के अंतर्गत वैली (घाटी) कहा जा रहा है। हाल में तो विगत सत्तर वर्ष से वंचित रखे गए लद्दाख को गवर्नरराज में मिले स्वतंत्र प्रशासनिक मंडल का स्वागत करने की जगह ''चिनाब वैली' और ''पीर पंचाल रेंज' को जम्मू से अलग कर मंडल का दरजा दिए जाने की मांग की गई। इसी दूरगामी साम्प्रदायिक राजनीति के चलते आज जम्मू अपने को चारों ओर से समुदाय विशेष से घिरा पा रहा है, और इसके विरु द्ध बोलने लगा है। हाल के वर्षों में जम्मू इलाके में अट्ठारह लाख से ज्यादा सरकारी भूमि रोशनी एक्ट के तहत गुप्त रूप से समुदाय विशेष को देकर जम्मू की पारंपरिक पहचान पर हमला बोल दिया गया है। यह तो भला हो सामाजिक कार्यकर्ता और वकील अंकुर शर्मा का जिनने आरटीआई ठोक कर इसका भंड़ाफोड़ किया और इस पर तत्काल प्रभाव से रोक लगवाई। इतना ही नहीं, म्यांमार से चले आए चालीस हजार से ज्यादा (कुछ के अनुसार एक लाख के करीब) समय के सताए रोहिंग्या मुसलमान और बांग्लादेशी मुस्लिम बांग्लादेश से कोलकाता के रास्ते सात-आठ राज्यों को लांघ कर कैसे सीधे जम्मू पहुंच कर यहां चुपचाप बसाए गए, लोग इससे आशंकित हैं। कश्मीर को इस मोड़ तक पहुंचाने वाले बाहरी-भीतरी अनगिनत कारणों में एक बुनियादी और बड़ा कारण है कश्मीर की राजनीति का ''मुस्लिम राष्ट्रवादी' गुप्त एजेंडा, जिस पर हमारे देश में बोलने का चलन नहीं है। लोग यहां हिंदुत्व, हिंदू राष्ट्रवाद, हिंदू साम्प्रदायिकता, भगवा आतंकवाद पर तो रात-दिन चिल्ला-चिल्ला कर भर्त्सना करते मिलेंगे पर उसी अनुपात और तेवर के साथ शायद ही कोई बुद्धिजीवी, वामपंथी विचारक, विश्लेषक, कवि, लेखक, पत्रकार मिलेगा जो भूले से भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पाकिस्तानपरस्ती, मुस्लिम राष्ट्रवाद और अलगाववाद पर बोला हो या बोलने के लिए तैयार हो। निंदा, विरोध, भर्त्सना के लिए साम्प्रदायिकता या उससे प्रेरित हिंसा का चुनाव करने और दूसरे वर्ग की साम्प्रदायिकता और उससे प्रेरित अलगाववाद तथा आतंकवाद पर चुप्पी लगाए बैठने से ऐसी पूर्वाग्रहजनित सोच ने इस देश का भला नहीं किया है।क्या किसी तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने बलात विस्थापित कर दिए गए लाखों कश्मीरी पंडितों के मुद्दे पर मुंह खोला? नहीं। उदाहरण के लिए जैसे 14 फरवरी को पुलवामा हमले के बाद देश के कई राज्यों में कश्मीरी छात्रों के साथ हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं, धमकियों की निंदा करना, उनकी यथाउचित सहायता और सौहार्द की अपील करना तो सब नागरिकों का नैसर्गिक कर्तव्य है, क्या किसी अपील में ऐसे कश्मीरी छात्रों से, जिन्होंने जम्मू सहित अनेक जगहों पर खुशी का इजहार किया तथा ''पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे गुंजाए, यह नसीहत नजर आई कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए? क्या यह शांति और समरसता का माहौल बनाए रखने के लिए आवश्यक नहीं? देश में ऐसा बौद्धिक माहौल तैयार किया गया है कि आप किसी साम्प्रदायिक घटना पर सहज प्रतिक्रिया व्यक्त करने से डरने लगते हैं कि कहीं प्रतिक्रियावादी न कहलाएं। इस तरह के प्रतिक्रियावादी-दर्शन की सैद्धांतिकी में खोट है क्योंकि''बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता' के प्रचलित सिद्धांत ने अल्पसंख्यकों की साम्प्रदायिकता को एक कवच प्रदान किया है।

वैश्विकी

ओआईसी एक खास मौका

डॉ. दिलीप चौबे

पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले के लिए जिम्मेदार आत्मघाती हमलावर आदिल अहमद डार ने जो वीडियो जारी किया था, उसमें कश्मीर के मुद्दे से अधिक जोर भारत के खिलाफ जेहादी एजेंडे पर दिया गया था। डार और उसका संगठन जैश-ए-मोहम्मद भारत के खिलाफ अपने साजिशी मंसूबों को केवल कश्मीर तक सीमित नहीं रखना चाहता, बल्कि पूरे भारत को खलीफाशाही के अंदर लाना चाहता है। इसके लिए इस्लाम की कट्टरपंथी व्याख्या करके जेहादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इन जेहादी संगठनों की मंशा है कि दुनिया के अन्य मुस्लिम देशों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करके भारत को कमजोर और विघटित किया जाए।भारत के लिए यह एक बड़ी चुनौती है कि कश्मीर में आतंकवादियों का मुकाबला करने के साथही यह भी बहुत जरूरी है कि इस लड़ाई में इस्लामी देशों का सक्रिय समर्थन हासिल किया जाए। सऊदी अरब, कुवैत और संयुक्त अरब अमीरात पश्चिम एशिया में ईरान के साथ प्रतिस्पर्धा में हैं। इस कारण हालात और पेचीदा हो रहे हैं।

सऊदी अरब सुन्नी बहुल देशों को अपना स्वाभाविक मित्र मानता है, और उन्हें शिया बहुल ईरान के खिलाफ लामबंद कर रहा है। सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच बढ़ती निकटता का यही कारण है। सऊदी अरब के शहजादे मोहम्मद बिन सलमान ने अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान खस्ताहाल इस्लामाबाद को बीस अरब डॉलर की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की लेकिन आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान की खुलकर आलोचना करने से परहेज किया। सऊदी अरब और पाकिस्तान ने जो साझा विज्ञप्ति जारी की उसमें संयुक्त राष्ट्र द्वारा सूचीबद्ध किए गए आतंकी मसूद अजहर को नियंत्रण आतंकवादी घोषित किए जाने की मांग पर राजनीति करने के विरुद्ध चेतावनी भी दी गई थी। भारत के लिए यह घटनाक्रम चिंता का विषय था। इसी संदर्भ में सऊदी अरब के शहजादे की भारत यात्रा को समझा और परखा जा रहा था। शहजादे मोहम्मद बिन सलमान की भारत यात्रा के निष्कर्ष को लेकर अलग-अलग व्याख्याएं की जा रही हैं। एक यथार्थपरक निष्कर्ष यह है कि सऊदी अरब पाकिस्तान के साथ अपनी निकटता खत्म करने नहीं जा रहा है क्योंकि दोनों के बीच ऐतिहासिक रिश्ते हैं। लेकिन भारत इस बात से आास्त हो सकता है कि सऊदी अरब के संसाधनों का भारत के खिलाफ इस्तेमाल नहीं होगा। साथ ही, सऊदी अरब से पनपने वाली जेहादी विचारधारा और वहां सक्रिय भारत विरोधी तत्वों के खिलाफ रियाद की सरकार कार्रवाईकरेगी। सऊदी अरब के शहजादे मोहम्मद बिन सलमान की भारत यात्रा के तुरंत बाद मुस्लिम देशों के शक्तिशाली मंच इस्लामी सहयोग संगठन (ओआईसी) के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को निमंतण्रमिला है। सुषमा स्वराज उद्घाटन सत्र में विशेष अतिथि के रूप में भाग लेंगी। कूटनीतिक दृष्टि से भारत के लिए यह बड़ी उपलब्धि है। विदेश मंत्रालय ने ओआईसी के इस निमंतण्रको भारत में 1.8 करोड़ मुसलमानों की मौजूदगी और इस्लामी जगत में भारत के योगदान को रेखांकित करने वाला स्वागतयोग्य कदम बताया है। ऐसा पहली बार हुआ है कि भारत को ओआईसी की बैठक में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। ओआईसी के विदेश मंत्रियों की परिषद का छयालिसवां सत्र अगले महीने की एक और दो तारीख को अबूधाबी में होगा। भारत को ऐसे समय में मुस्लिम देशों के इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है, जब नई दिल्ली पाकिस्तान को नियंतण्र बिरादरी से बहिष्कृत करने के लिए अपना कूटनीतिक अभियान चला रही है। आम तौर पर यह माना जाता है कि ओआईसी कश्मीर के मुद्दे पर पाक का समर्थन करता है। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज निश्चित ही अपने संबोधन और समकक्ष मंत्रियों से बातचीत के दौरान पुलवामा हमले और जम्मू-कश्मीर में सीमा पार से चलाई जा रही आतंकवादी घटनाओं पर चर्चा करेंगी। ऐसे समय में जब भारत सरकार जम्मू-कश्मीर में हुर्रियत समेत अन्य पृथकतावादी और आतंकवादियों के खिलाफ सख्ती से पेश आने की नीति पर अमल कर रही है, उस समय इस्लामी देशों का समर्थन नई दिल्ली के लिए खास मायने रखता है।

बतंगड़ बेतुक

न्याय परे गजराज हमारे

विभांशु दिव्याल

अपने सर्वोच्च न्यायालय पर अपुन को अभिमान है, उसके न्याय के प्रति अपुन के मन में गहरा सम्मान है, वह अनेक महामारियों और नेताग्रस्त हमारे महान देश की आन-बान-शान है। पर क्या करें, कभी-कभी न्यायालयीय टिप्पणी पर अपुन के लय-ताल बिगड़ जाते हैं, और अपुन हत्थे से उखड़ जाते हैं। जैसे कि इस समय उखड़े हुए हैं, कुछ कहें या न कहें की जद्दोजहद पर खड़े हुए हैं। यह कोई बात हुई कि पूछा जाये कि मूर्ति क्यों बनवाई, बनवाई तो हाथी की क्यों बनवाई, बनवाई सो बनवाई मगर पार्क में क्यों लगवाई? कुछ को यह बात भी नहीं सुहाई कि हाथी तो हाथी, हाथी की बगल में खुद अपनी मूर्ति क्यों गढ़वाई। और यह तो हद हो गयी कि मूर्तियों पर खर्च हुए सरकारी पैसे को पैसे का दुरुपयोग बताया जाये और इस पैसे को मूर्ति निर्माता की निजी जेब से निकलवाने का फरमान सुनाया जाये।जग जानता है कि जब मूर्ति निर्माण का प्रदेशव्यापी अनुष्ठान चल रहा था, तब सरकार दलित की बेटी की थी, सरकारी खजाना दलित की बेटी का था, खजाने पर निशाना दलित की बेटी का था। किस जमीन पर पार्क बनाया जाये, पार्क में किसकी मूर्ति बिठायी जाये, क्यों बिठायी जाये, कैसे बिठायी जाये, किससे बिठवायी जाये, यह सब तय करने का पैमाना भी दलित की बेटी का था। दलित की बेटी थी तो क्या मूर्ति मनुवादियों की लगवाती, मनुवादियों के पंडे-पुजारियों की लगवाती, जो देवी-देवता सदियों से पुजते आ रहे हैं उन्हें फिर से पुजवाती? दलितों-पिछड़ों के जिन संत-महात्माओं को उपेक्षित किया गया था, जिन्हें मुख्यधारा से बहिष्कृत रखा गया था, जिन पर कभी ध्यान नहीं दिया गया था, जिनके कर्म-उपदेशों का कभी संज्ञान नहीं लिया गया था, तो क्या दलित की बेटी भी उन पर ध्यान नहीं देती, उनका संज्ञान नहीं लेती? मूर्तियां लगीं, प्रदेश भर में लगीं। जिनको चुभीं उनको चुभीं मगर मूर्तियां लगीं तो खूब लगीं।अब बेचारे हाथियों पर भी एतराज जताते हो, उन्हें पार्टी के चुनाव-चिह्न का प्रचार बताते हो। जिन्हें हाथी और हाथी का फर्क नहीं मालूम, जिनको चुनावी हाथी और पार्किया हाथी के अस्तित्व का तर्क नहीं मालूम और तर्क समझाने पर भी उनकी समझ में न आये तो उनकी बुद्धि पर तरस न खाया जाये तो और क्या किया जाये? चुनावी हाथी नम्र है, शांत है और वोटर से उसका वोट मांगने की मुद्रा में है, इसलिए उसकी सूंड नीची है, जमीन के नजदीक है। अत- जमीनी है। वह प्रत्याशी है, जीत का अभिलाषी है। उधर पार्किया हाथी को देखिए, उसकी सूंड आसमान में उठी हुई है जैसे चिघांडकर विजयनाद कर रही हो, जनता का अभिवादन स्वीकार कर रही हो और लोगों में अपनी सत्ता का भाव भर रही हो। चुनावी हाथी चुनाव से पहले का हाथी है, पार्किया हाथी चुनाव बाद की जीत का हाथी है। वह महाराज है, गजराज है। जब एक इतना बेहाल दिखे और दूसरा इतना खुशहाल हो, दोनों के बीच का अंतर इतना विशाल हो तब पार्किया हाथी पर चुनावी हाथी को आरोपित करना, उसे चुनाव चिह्न बताकर दोषित करना सिर्फ विपक्षियों का खेल है, उनके गंदे मन का गंदा मैल है। मैले मन के लोग गजमूर्ति के निर्माण-व्यय पर भी सवाल उठाते हैं कि जो मूर्ति दस लाख से कम में बन सकती थी, ज्यादा सुंदर बन सकती थी, उस पर नब्बे लाख क्यों व्यय हुए, इतने भारी दाम किसके लिए और कैसे तय हुए। अरे भैया, अधिकारी, ठेकेदार, मंत्री और मातहत क्या भूखे मर जायें, अगर मूर्तियों से न कमाएं तो कहां से कमाएं? पार्टी को भी देना है तो क्या घर से लायें? वैसे भी सब फालतू बातें हैं, इनसे मूर्ति स्थापना का सद्प्रयास भ्रष्ट नहीं हो जाता, गजराज में प्रतिष्ठित देवत्व नष्ट नहीं हो जाता।जलकुक्कड़ जमात इस पर ज्यादा कुढ़ी कि दलित की बेटी ने खुद अपनी मूर्ति क्यों गढ़ी? नैतिकता छोड़ अनैतिकता के रास्ते पर क्यों बढ़ी? कोई इनसे पूछे कि कोई अपनी मूर्ति बनवाता है, लगवाता है तो इसमें इनके पापा का क्या जाता है! कोई इन्हें समझाए कि मनुष्य प्राण रहते हुए भी नश्वर है, और मूर्ति निष्प्राण होते हुए भी अमर है। और अमरत्व कौन नहीं चाहता, कौन नहीं चाहता कि लोग चिरकाल तक उसे माथा नवाएं, उसकी मूर्ति पर श्रद्धा से माला चढ़ाएं। इसमें कौन सा पाप हो गया कि कोई जीते जी अपनी मूर्ति गढ़वा दे और अपनी आंखों के आगे ही उस पर माला चढ़वा दे। भई, अपनी सरकार बार-बार थोड़े ही बनती है, काठ की हांडी बार-बार थोड़े ही चढ़ती है। जब एक बार चढ़ गयी तो मूर्ति भी गढ़ गयी। इसमें नैतिकता कहां से आ गयी? किसी काम के लिए नैतिकता नहीं कलेजा चाहिए जो दलित की बेटी के पास भरपूर है, वह इसी के लिए तो मशहूर है।बाकी लोग भी सरकार बनाते हैं, सरकार बनते ही सरकारी खजाने पर कब्जा जमाते हैं, पता नहीं लगने देते कि धन कहां दबाया, कहां छुपाया। मगर यहां न कोई दुराव है न कोई खोट है, जो है वह डंके की चोट पर है। पैसा कहां है, तो मूर्तियों को देख लो, वहां है। हे न्यायनाथ, इस खरेपन के साथ अन्याय मत होने देना, दलित की बेटी को न्याय देना।

> जलकुक्कड़ जमात इस पर ज्यादा कुढ़ी कि दलित की बेटी ने खुद अपनी मूर्ति क्यों गढ़ी, नैतिकता छोड़ अनैतिकता के रास्ते पर क्यों बढ़ी? कोई इनसे पूछे कि कोई अपनी मूर्ति बनवाता है, लगवाता है तो इसमें इनके पापा का क्या जाता है? कोई इन्हें समझाए कि मनुष्य प्राण रहते हुए भी नश्वर है, और मूर्ति निष्प्राण होते हुए भी अमर है। और कौन नहीं चाहता कि लोग चिरकाल तक उसे माथा नवाएं, उसकी मूर्ति पर श्रद्धा से माला चढ़ाएं। इसमें कौन सा पाप हो गया कि कोई जीते जी अपनी मूर्ति गढ़वा दे और अपनी आंखों के आगे ही उस पर माला चढ़वा दे

जो सत्य है वही शिव है

जो सत्य है वही शिव है और जो शिव है वही सुंदर है। इसी प्रकार सत्य न तो विभक्त है और न ही भक्त। सत्य तो अखिल अस्तित्व में व्यक्त है। यह व्यक्त ही व्यक्ति होकर कभी श्रीराम तो कभी श्रीकृष्ण बनकर प्रकट हो जाता है और विभिन्न युगों में धरती पर अवतार लेकर मानव का कल्याण करते हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण ही वक्तत्व होकर रामायण और गीता हो जाते हैं। जिस रामायण और गीता को हम श्रीराम और श्रीकृष्ण की गाथा कह रहे हैं वे तो उस अव्यक्त के व्यक्त होने के वक्तत्व हैं।

ब्रह्मंड में वक्त का अस्तित्व नहीं होता। वहां तो मात्र व्यक्त का अस्तित्व होता है। ब्रह्मंड का एक सूर्य ही पृथ्वी के समुद्रों से जल उठाकर आकाश को पहुंचा देता है, लेकिन आकाश और ब्रह्मंड में बहुत फर्क है। ब्रह्मंड का पृथ्वी के आकाश से कोई लेना-देना नहीं है। ब्रह्मंड में पृथ्वी तो मात्र एक छोटा-सा पिंड है, जिसे ब्रह्मंड अपने में धारण किए हुए है। द्वापर युग की बात है, जब कन्हैया ने माता यशोदा को अपना मुख खोलकर दिखाया तो माता कुछ पल के लिए होश खो बैठीं। दरअसल, उन्हें कन्हैया के श्रीमुख में अखिल ब्रह्मंड के दर्शन हो रहे थे। उनके मुख में ग्रह-नक्षत्रों के अलावा अरबों-खरबों तारों के बनने, बिगड़ने और बिखरने के दृश्य दिख रहे थे। इस प्रकार माता यशोदा का सत्य से साक्षात्कार हो रहा था। 1 इस घटना के माध्यम से ब्रह्मंड हमें यह संदेश कन्हैया के बालमुख से पहले ही दे दिया गया था कि एक दिन इस कन्हैया के मुख से ही द्वापर युग का उद्बोधन होगा। सच पूछें तो श्रीमद्भगवतगीता ब्रह्मंड के उद्बोधन का ही संबोधन है।

घटना के संदर्भ में निराकार ने अपना चेहरा दिखा दिया है, लेकिन कमाल यह है कि वह निराकार यह भी कह गया है कि मैं यह नहीं हूं। यानी जब वह निराकार चेतना यह कहती है कि मैं वासुदेव या श्रीकृष्ण हूं, पांडवों में मैं धनंजय यानी अजरुन हूं, मुनियों में मैं व्यास हूं और कवियों में मैं उशना कवि हूं। तो इसका मतलब यह हुआ कि श्रीकृष्ण अपने श्रीमुख से जो बोल रहे हैं वह यह घोषणा कर रहे हैं कि वह अजन्मा हैं, जो अपने होने का सुबूत तो देता है, लेकिन स्वयं पर ज्यादा बात करना पसंद नहीं करता।

यंत्र पूजन से दरिद्रता दूर होती है और घर में चिरस्थाई लक्ष्मी का वास होता है

यंत्र कई प्रकार के होते हैं जिनमें भूपृष्ठ, मेरूपृष्ठ, पाताल, मेरूप्रस्तर, कूर्मपृष्ठ आदि मुख्य हैं। यंत्रों में रेखा, बीज, अंक, मंत्रों आदि का प्रयोग होता है। अष्टगंध, पंचगंध की स्याही बना कर या केसर, हल्दी, सिंदूर आदि का प्रयोग कर यंत्र लेखन किया जाता है। भोजपत्र, तांबा, चांदी, सोने आदि के पत्र पर यह निर्मित होता है। अनार, चमेली, नीम, आम, आक की टहनी, पक्षियों के पंख आदि से लिखा जाता है। शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित यंत्र मनोकामना पूर्ति में सहायक होने के साथ ही आपकी जिंदगी बदलने में समर्थ होता है। कुछ उपयोगी यंत्र निम्न हैं-

श्री यंत्र

श्री यंत्र आध शार्क का प्रतीक है। इसे यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण 'यंत्र राज' भी कहा जाता है। इस यंत्र की अधिष्ठात्री देवी मां त्रिपुर सुंदरी हैं। रविपुष्य, गुरुपुष्य नक्षत्र या अन्य शुभ मुहूर्त में रजत, ताम्र, स्वर्ण या भोजपत्र पर इस यंत्र का निर्माण करें। तत्पश्चात् यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा कर मां त्रिपुर सुंदरी का ध्यान एवं कमल गट्टे या रूद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का जाप करें-

श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं लीं श्री ? महालक्ष्मये नमः।

दीपावली, शरद या चैत्र नवरात्रा, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी की रात्रि को इस यंत्र की साधना विशेष फलदायी मानी जाती है। इस यंत्र की पूजा-अर्चना से दुख, दरिद्रता दूर होकर घर में चिरस्थाई लक्ष्मी का वास होता है। व्यापार, नौकरी में मनोनुकूल फल प्राप्ति होती है। सुख, समृद्धि की प्राप्ति के साथ सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

श्री सर्वसिद्धि यंत्र

सर्वसिद्धि यंत्र मां सरस्वती की पूजा के लिए होता है। पढ़ाई में एकाग्रचित्तता न बनती हो, ग्रह जनित दोषों के कारण शिक्षा में व्यवधान आता हो, तो इस यंत्र का रविपुष्य, गुरुपुष्य नक्षत्र, वसंत पंचमी या अन्य शुभ मुहूर्त में अनार की कलम से भोजपत्र या ताम्रपत्र पर निर्माण करें। यंत्र की स्थापना श्वेत वस्त्र पर रखकर करें। यंत्र निर्माण के पश्चात् प्रतिदिन निम्न मंत्र का सरस्वती मां के समक्ष जाप करें- ? ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वतयै बुधजन्नयै स्वाहा।' श्वेत वस्त्र पहन कर श्वेत पुष्प अर्पित कर मां सरस्वती की पूजा-अर्चना से शिक्षा में बाधा दूर होती है।

व्यापार वृद्धि यंत्र

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, रवि या गुरुपुष्य नक्षत्र में यह यंत्र भोजपत्र, तांबे, चांदी या स्वर्ण पत्र पर शुभ मुहूर्त में बनवा कर इसकी पूजा-अर्चना करें। श्वेत आसन, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र का प्रयोग कर ? ह्रीं श्रीं नमः' मंत्र की एक माला का जाप 21 या 51 दिन तक करने पर यंत्र सिद्ध हो जाता है। इस यंत्र को तिजोरी, अलमारी या व्यापार स्थल पर रखने से व्यापार में वृद्धि और लाभ मिलता है।

असाध्य रोग निवारक यंत्र

रवि या गुरुपुष्य नक्षत्र या किसी भी शुभ मुहूर्त में इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से अनार की कलम से लिखकर गूगल की धूप देकर गले में बांधने से असाध्य रोग नष्ट होता है।

कनकधारा यंत्र

भौतिकवादी युग में प्रत्येक व्यक्ति शीघ्र धनवान बनना चाहता है। धन प्राप्ति हेतु रवि या गुरुपुष्य नक्षत्र यजा शुभ मुहूर्त में इस यंत्र का निर्माण कर मां लक्ष्मी के समक्ष कनकधारा स्तोत्र एवं निम्न मंत्र का नित्य जाप करें- ? वं श्रीं वं ऐं लीं श्रीं क्लीं कनकधारयै स्वाहा।'

उक्त मंत्र एवं कनकधारा स्तोत्र सहित कनकधारा यंत्र की पूजा-अर्चना से दरिद्रता दूर होती है, ऋण से मुक्ति मिलती है। नौकरी और व्यापार में लाभ प्राप्त होता है, आकस्मिक धन प्राप्त होता है। प्रसिद्ध ग्रंथ शंकर दिग्विजय के चौथे सर्ग में उल्लिखित घटनानुसार जगद्गुरु शंकराचार्य ने एक दरिद्र ब्राह्मण के घर इस स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा करवाई थी।

ग्रह शांति यंत्र

यह नव ग्रह यंत्र है। कुंडली में किसी ग्रह के प्रतिकूल होने पर पीड़ा पहुंचाने या दशा-महादशा में ग्रहजनित पीड़ा होने पर रविपुष्य गुरुपुष्य नक्षत्र में इस यंत्र का निर्माण कर प्रतिदिन इसकी पूजा-अर्चना और नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें और प्रतिकूल ग्रह के तन्त्रोक्त मंत्र का निश्चित संख्या में जप करने पर संबंधित ग्रह की पीड़ा शांत होकर शुभ फल प्राप्त होता है।

धर्म

जहां मनौती पूर्ण होने पर सांकल अर्पित किए जाते हैं

छत्तीसगढ़ के सोरिदखुर्द स्थित रमई माता मंदिर में इन दिनों लोहे के सांकलों की ढेर लग गई है। जो भी दर्शन को पहुंच रहा है, वह मनौती पूर्ण होने पर माता को सांकल अर्पित कर रहा है। नवरात्रि पर बड़ी संख्या में माता रमई के दर्शन-पूजन के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। राजिम से फिंगेश्वर होते हुए करीब 22 किलोमीटर दूर गुंडरदेही पंचायत के आश्रित ग्राम सोरिदखुर्द रमई माता का निवास स्थल माना जाता है। गांव से एक किलोमीटर दूर जंगल के बीच माता रमई बरसों से विराजित हैं। यहां बारहों महीने माता के दर्शन-पूजन के लिए लोगों का तांता लगा रहता है। मंदिर के पुजारी रामधीन ने बताया कि त्रेता युग में वनवास काल पूरा होने पर भगवान रामचंद्र लंका से वापस अयोध्या जाते हुए यहां आए थे। इसलिए इसे रमईपाठ कहा जाता है। यहां के राम-जानकी मंदिर में मधुमक्खियों का छत्ता लगा हुआ है। भक्तजन पास से आते-जाते रहते हैं, लेकिन मधुमक्खियां किसी को परेशान नहीं करती हैं।

मधुमक्खियों को छत्तीसगढ़ी में भांवर माछी कहते हैं। दुर्गा सप्तशती में वर्णित है कि देवी दुर्गा ने तीनों लोकों के हित में छह पैरों वाले भ्रमर का रूप धारण कर अरुण नामक दैत्य का वध किया था। तब से माता का एक नाम भ्रामरी पड़ा। क्षेत्र में मधुमक्खियों को माता का ही रूप माना जाता है। यहां आए श्रद्धालु रघुनाथ साहू का कहना है कि माता रमई पाठ स्थल को थोड़ी और सुविधाएं मुहैया कराई जानी चाहिए। श्रद्धालु के ठहरने के लिए धर्मशाला का निर्माण करा दिया जाए तो यहां आने वाले लोगों की संख्या और बढ़ेगी तथा तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्धि भी बढ़ेगी।

इतिहासविद् डॉ बसुबंधु दीवान कहते हैं कि फिंगेश्वर के राजा ठाकुर दल गंजन सिंह के पिता विश्वनाथ सिंह ने शिकार के दौरान इस स्थल पर डेरा डाला था तो माता ने दर्शन देकर उन्हें कृतार्थ किया था। तब से इस वंश के लोग माता को कुलदेवी मानते हैं।

फिंगेश्वर की मौली माता व सोरिदखुर्द की माता रमई, दोनों को क्षेत्र के लोग सगी बहन मानते हैं। आज भी मौली माता खदर की झोपड़ी में रहती हैं तो माता रमई कोसम पेड़ के नीचे बनी झोपड़ी में रहती हैं।

मान्यता है कि जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से यहां मनौती मानते हैं, उनकी मनौती माता जरूर पूरी करती हैं। खासकर यहां संतानहीन लोग संतान की कामना में आते हैं। उनकी मनौती पूर्ण होने पर वे यहां आकर लोहे की सांकल चढ़ाते हैं। बगरम पाठ लोगों के चढ़ाए हुए लोहे के सांकलों से भर गया है।

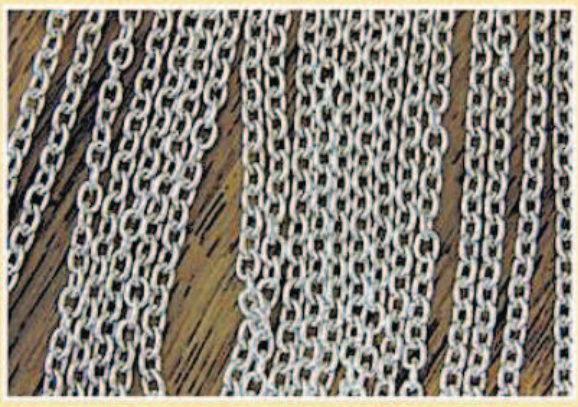

मंदिर के पुजारी ने बताया कि इन सांकलों को माता का झूलना बताया जाता है। मंदिर परिसर के आम के वृक्ष से बारहों मास पानी निकलता रहता है, जिसे यहां आने वाले लोग माता का प्रसाद मानकर ग्रहण करते हैं।

जब सूर्य को निगल गए

हनुमान जी

एक बार की बात है माता अंजनि हनुमानजी को कुटि में लिटाकर कहीं बाहर चली गयीं। थोड़ी देर में इन्हें तेज भूख लगने लगी। इतने में आकाश में सूर्य भगवान उगते हुए इन्हें दिखायी दिये। इन्होंने समझा कि यह कोई लाल लाल सुंदर मीठा फल है। बस एक ही छलांग में वह सूर्य भगवान के निकट जा पहुंचे और उन्हें पकड़कर अपने मुंह में रख लिया। सूर्य ग्रहण का दिन था, राहु सूर्य को ग्रसने के लिए उनके पास पहुंच रहा था। उसे देखकर हनुमानजी ने सोचा यह कोई काला फल है, इसलिए उसकी ओर भी झपटे। राहु किसी तरह भागकर देवराज इंद्र के पास पहुंचा। उसने कांपते स्वरों में कहा, %भगवन् आज आपने यह कौन सा दूसरा राहु सूर्य को ग्रसने के लिए भेज दिया? यदि मैं भागा ना होता तो वह मुझे भी खा गया होता।

राहु की बातें सुनकर देवराज इंद्र को बड़ा अचंभा हुआ। वह अपने सफेद हाथी पर सवार होकर हाथ में वज्र लेकर बाहर निकले। उन्होंने देखा कि एक वानर बालक सूर्य को मुंह में दबाए आकाश में खेल रहा है। हनुमान ने भी सफेद ऐरावत पर इंद्र को देखा। उन्होंने समझा कि यह कोई खाने लायक सफेद फल है। वह उधर भी झपटे। यह देखकर देवराज इंद्र बहुत ही क्रोधित हो उठे। उन्होंने खुद को अपनी ओर झपटते हनुमान से बचाया और सूर्य को छुड़ाने के लिये हनुमान की ठुड्डी पर वज्र का तेज प्रहार किया। वज्र के प्रहार से हनुमान का मुंह खुल गया और वह बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। हनुमान के गिरते ही उनके पिता वायु देवता वहां पहुंच गये। अपने बेहोश बालक को उठाकर उन्होंने गले से लगा लिया। माता अंजनि भी वहां दौड़ती हुई आ पहुंचीं। हनुमान को बेहोश देखकर वह रोने लगीं। वायु देवता ने क्रोध में आकर बहना ही बंद कर दिया। हवा के रुक जाने के कारण तीनों लोकों में प्राणी व्याकुल हो उठे। पशु, पक्षी बेहोश हो होकर गिरने लगे। पेड़ पौधे और फसलें कुम्हलाने लगीं। ब्रह्माजी इंद्र सहित सभी देवताओं को लेकर वायु देवता के यहां पहुंचे। उन्होंने अपने हाथ से छूकर हनुमान को जीवित करते हुए वायु देवता से कहा, वायु देवता आप तुरंत बहना शुरू करें क्योंकि वायु के बिना हम सब लोगों के प्राण संकट में पड़ गये हैं। यदि आपने बहने में जरा भी देरी की तो तीनों लोकों के प्राणी मौत के मुंह में चले जाएंगे। आपके इस बालक को आज सभी देवताओं की ओर से वरदान प्राप्त होगा। ब्रह्माजी की बात सुनकर सभी देवताओं ने कहा कि आज से इस बालक पर किसी प्रकार के अस्त्र शस्त्र का प्रभाव नहीं पड़ेगा। इंद्र ने कहा, मेरे वज्र का भी इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसकी ठुड्डी (हनु) वज्र से टूट गयी थी इसलिए आज से इसका नाम हनुमान होगा।

ब्रह्माजी ने कहा वायुदेव तुम्हारा यह पुत्र बल बुद्धि विद्या में सबसे बढ़ चढ़कर होगा। तीनों लोकों में किसी भी बात में इसकी बराबरी करने वाला दूसरा कोई ना होगा। यह भगवान राम का सबसे बड़ा भक्त होगा। इसका ध्यान करते ही सभी प्रकार के दुख दूर हो जाएंगे। यह मेरे ब्रह्मास्त्र के प्रभाव से सदा मुक्त होगा। वरदान से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी एवं देवताओं की प्रार्थना सुनकर वायुदेव ने फिर पहले की तरह बहना शुरू कर दिया जिससे तीनों लोकों के प्राणी प्रसन्न हो उठे।

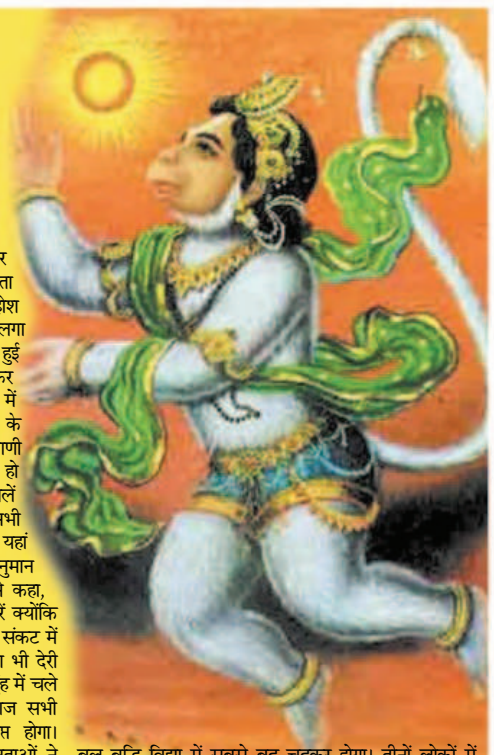

विचार करें! आप किस श्रेणी में आते हैं पाखंडी या साधक

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इंद्रियार्थान्विमूढ़ात्मा मिथ्याचार- स उच्यते।।

साधना कोई दिखावा नहीं, यह तो भीतर का अभ्यास है। साधना किसी के लिए नहीं बल्कि अपने लिए होती है लेकिन व्यक्ति साधना में भी दिखावा करता है। मन से तो इंद्रियां विषयों की ओर जाने को ललचाती रहती हैं लेकिन ढोंगी स्वभाव उसे ऊपर से ढक लेता है और ऐसे दिखाता है जैसे वह इन विषयों से ऊपर उठ गया है जबकि मन में बुरे विचारों की गंदगी भरी रहती है।

इंसान सोचता है कि किसी को उसके विषय-विकारों का पता न चले और वह खुद को अच्छा जताने के लिए ऊपर से अच्छेपन को ओढ़ लेता है। इसी प्रकार अच्छा खाने-पीने और मौज-मस्ती में जिंदगी बीत जाती है। ये बुराइयां केवल जवानी में ही अपना जोर नहीं मारतीं बल्कि बुढ़ापे में भी उनका जोर बना रहता है, बस तब शरीर साथ नहीं देता। इसलिए पाखंडी बनकर न रहो, मन की गंदगी निकालो और निर्मल बन कर जियो।

जो बाहर से तो शरीर को संचालित करने वाली इंद्रियों को नियंत्रित कर लेता है, परन्तु मन से उन इंद्रियों के विषयों का चिंतन करता रहता है, वह कम बुद्धि वाला मनुष्य पाखंडी कहा जाता है।

सोनिया, प्रियंका, राहुल जनसभा को संबोधित करेंगे

२८ को त्रिमंदिर में कांग्रेस की जनसंकल्प महारैली और सभा

कांग्रेस के कई दिग्गज नेता आने की वजह से लाखों लोगों के पहुंचने की वजह से सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त

अहमदाबाद । आगामी २८ फरवरी को गांधीनगर के अडालज त्रिमंदिर में कांग्रेस की जनसंकल्प रैली आयोजित की जाएगी । यह रैली में गांधी परिवार के तीन सदस्य सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी और राहुल गांधी एक साथ एक मंच पर मौजूद होंगे ।

गुजरात में लोकसभा के चुनाव लिए प्रचार के दृष्टिकोण से काफी महत्व और उल्लेखनीय घटना मानी जाएगी । तीन नेताओं की मौजूदगी को लेकर एसपीजी सहित की सुरक्षा एजेंसियों ने भी सोमवार को त्रिमंदिर के निकट मैदान में पहुंचकर सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया गया था । राष्ट्रीय स्तर के यह कार्यक्रम में कांग्रेस के कई दिग्गज और राष्ट्रीय महानुभाव आने की वजह से लाखों लोगों के पहुंचने की वजह से सुरक्षा को लेकर कड़े बंदोबस्त किए गए हैं । एसपीजी, स्थानीय

पुलिस सहित की सुरक्षा टीम के अधिकारी सोमवार को अडालज त्रिमंदिर के पास सभा स्थल का निरीक्षण करने के लिए यहां पहुंचे थे । दूसरी तरफ गुजरात कांग्रेस अध्यक्ष अमित चावडा सहित के कांग्रेस के स्थानीय नेताओं ने भी यहां खुद मुलाकात करके स्थल जांच और तैयारियों की खुद जानकारी ली । गुजरात में लोकसभा के चुनाव को लेकर कांग्रेस के प्रचार कार्य के प्रारंभ में विशाल और बड़ी जनसभा को खुद सोनिया, प्रियंका और राहुल गांधी जनसभा को संबोधित करेंगे । गुजरात कांग्रेस अध्यक्ष अमित चावडा ने यह मामले में बताया है कि, इस रैली में किसानों के कर्ज माफी, युवाओं को रोजगार का संकल्प व्यक्त किया जाएगा ।

इतना ही नहीं इस रैली में कांग्रेस शासित चार राज्यों के मुख्यमंत्री भी मौजूद होंगे । फिलहाल इस मामले में जोरशोर से तैयारियां चल रही है । तैयारी के तहत ही एसपीजी की टीम जांच के लिए यहा आई है । कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक वर्ष १९६० बाद पहली बार गुजरात में हो रही है और इसमें आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर रणनीति सहित की रूपरेखा तैयार की जाएगी और महत्व के निर्णय लिए जाएंगे ।

सचीन जी.आई.डी.सी में विजिलेन्स टीम द्वारा दारु के अडडों पर छापा

सचीन जी.आई.डी.सी पुलिस के देख रेख में फल फुल रहा दारु का अवैध कारोबार

सूरत। विजिलेन्स विभाग द्वारा सचीन जी.आई.डी.सी में रेड मारकर 900 लीटर दारू, 25 हजार रुपए का केमिकल, तीन मोबाईल फोन और दो युवकों को पकड़ा है। विजिलेन्स टीम द्वारा अगर सचीन जी.आई.डी.सी में ही नहीं अगर उधना,डिंडोली तथा पांडेसरा इलाके में भी छापे मारी की जाएगी तो इससे भी बड़े पैमाने पर दारू और दारू का अवैध धंधा चलाने वालों को पकड़ सकती है क्योंकि सचीन से भी बडे पैमाने पर उधना इलाके में अवैध दारू का

धंधा चलाया जा रहा है। सचीन में तो मछलीया ही काम पर लगी है लेकिन उधना इलाके में तो मगरमच्छ बैठे है, जो किसी भी पी.आई को अपने काबू में करके अपने इशारों पर नचा लेते है।

शिक्षकों, आंगनवाड़ी विभागों में हड़ताल की बौछार

अब सफाई कर्मचारियों की ५ मार्च से हड़ताल की चेतावनी

लोकसभा के चुनाव पहले ही भाजपा सरकार एक के बाद एक कर्मचारियों की हड़ताल से काफी परेशानी में

अहमदाबाद,२५ फरवरी ।

गुजरात में जैसे हड़ताल की मौसम आ गई है । पहले एसटी के कर्मचारियों, शिक्षकों, हेल्थ विभाग और आंगनवाड़ी बहनों की हड़ताल के बाद लोकसभा के चुनाव पहले ही भाजपा सरकार एक के बाद एक विभागों के कर्मचारियों की हड़ताल से काफी परेशानी बढ़ गई है । एक तरीके से कर्मचारियों ने चुनाव पहले अपनी मांग को पूरा करवाने के लिए जैसे राज्य सरकार पर दबाव बढ़ा रहे हैं ऐसी छवि सामने आई है । सरकार के विभिन्न विभागों के स्थाई ड्यूटी कर रहे कर्मचारी आवेदन पत्र और हड़ताल का शस्त्र उठाकर सरकार की परेशानी को बढ़ा दी है, अब राज्य के सफाई कर्मचारियों ने भी अपनी मांगों को लेकर आगामी ५ मार्च से राज्यव्यापी हड़ताल की चेतावनी देने से सरकारी और नगरपालिका तथा महानगरपालिका प्रशासन में सनसनी मच गई । फिलहाल में प्राथमिक शिक्षकों और एसटी कर्मचारियों की हड़ताल बाद राज्य सरकार ने बातचीत द्वारा समाधान लाने के लिए प्रयत्नशील है । अभी जिला पंचायत

स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों की ११वें दिन हड़ताल बरकरार है तब गुजरात के सफाई कर्मचारियों ने भी राज्य में आगामी ५ मार्च से अपनी लंबित मांगों के लिए हड़ताल पर उतरकर सरकार के विरूद्ध राज्यभर में धरना आयोजित करके विरोध प्रदर्शन करेंगे ऐसी चेतावनी दी है । इस मामले में गुज रात राज्य वाल्मिकी समाज के अध्यक्ष और सफाई कर्मचारियों के न्याय के लिए सरकार और प्रशासन के विरूद्ध लालजी भगत ने मोडासा में यह आगामी आंदोलन की घोषणा करते हुए कहा कि, सफाई कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर आगामी ५ मार्च से राज्यव्यापी हड़ताल के लिए सरकार को चेतावनी दी जाती है । राज्य की १६२ नगरपालिका, ग्राम पंचायतों, सरकारी कर्मचारियों में काम करते सभी कर्मचारी ५ मार्च से सरकार के विरूद्ध बगावत करके विरोध प्रदर्शन करेंगे । पिछले कई समय से सफाई कर्मचारियों की मुख्य १३ लंबित मांगों को पूरा नहीं करने से अब लड़ने के मुड में होने का बताया गया ।

एनएसयूआई द्वारा लॉ गार्डन के पास ठाकोरभाई देसाई हॉल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

युवतियां अहमदाबाद की निवासी होने का सामने

जामखंभालिया से आधार-सबूत बिना की ३५ युवतियां पकड़ी गई

किसी संस्था के नाम पर जामखंभालिया में पैसा वसूलती थी, पुलिस ने अब पूरे मामले में गहन जांच शुरू कर दी

अहमदाबाद,२५ फरवरी ।

जामनगर के जामखंभालिया से संदिग्ध हालत में ३५ युवतियां पकड़े जाने से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई । हालांकि पकड़ी गई यह ३५ युवती किस प्रवृत्ति के साथ जुड़ी हुई हैं और किसके इशारे पर काम कर रही थी यह सहित के प्रश्नों के जवाब तलाशने की दिशा में पुलिस ने अब जांच शुरू कर दी है । पुलिस ने किसी भी प्रकार के आधार-सबूत बिना की सभी ३५ युवतियां को हिरासत में लेकर उनको स्थानीय पुलिस स्टेशन में ले जाकर उनकी पूछताछ शुरू कर दी है । पुलिस जांच में चौंकाने वाली सच्चाई सामने आई थी कि, सभी ३५ युवतियों के पास इसकी पहचान मामले में इलेक्शन कार्ड, आधारकार्ड सहित के किसी आधार-सबूत उपलब्ध नहीं था, जिसकी वजह से पुलिस ने उनको हिरासत में सहित के क्षेत्रों की निवासी है । हालांकि, वह यहां किस परिस्थिति में और किसकी मदद से आयी और यहां जामखंभालिया में किस प्रवृत्ति में जुड़ी हुई थी यह सहित की दिशा में पुलिस ने गहन जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने किसी भी प्रकार के आधार-सबूत बिना की सभी ३५ युवतियां को हिरासत में लेकर उनको स्थानीय पुलिस स्टेशन में ले जाकर उनकी पूछताछ शुरू कर दी है । पुलिस जांच में चौंकाने वाली सच्चाई सामने आई थी कि, सभी ३५ युवतियों के पास इसकी पहचान मामले में इलेक्शन कार्ड, आधारकार्ड सहित के किसी आधार-सबूत उपलब्ध नहीं था, जिसकी वजह से पुलिस ने उनको हिरासत में लिया था । किसी संस्था के नाम पर पैसे वसूलती ३५ युवतियां अलग-अलग गली में घूम रही थी । यह युवतियों की संदिग्ध गतिविधि मामले में पुलिस को जानकारी दी गई थी । इसके बाद इंचार्ज पीआई अरविंदसिंह जाडेजा द्वारा कार्रवाई शुरू करके सभी को हिरासत में लेकर स्थानीय पुलिस स्टेशन पर लाई गई थी और उनकी पूछताछ शुरू कर दी है । जिसमें पुलिस जांच यह युवतियां अहमदाबाद के ओढव, सरदारनगर और छारानगर सहित के निवासी होने का सामने आया । जिसकी वजह से अब जामखंभालिया पुलिस अब अहमदाबाद पुलिस की मदद ले और उनको भी जांच में शामिल करने की संभावना है ।

स्वाइन फ्लू बेकाबु : दो की मौत, मृतांक ९० तक पहुंचा

अहमदाबाद, २५ फरवरी ।

स्वाइन फ्लू के कारण मोत का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है । आज और दो लोगों की मौत हो गई और बड़ी संख्या में केस सतह पर आये हैं । वडोदरा में दो लोगों की मौत हो जाने से मौत का आंकड़ा बढ़कर ९० पर पहुंच गया है । दुसरी ओर अकेला वडोदरा में छह केस सतह पर आये है । अहमदाबाद में पिछले २३ दिन में स्वाइन फ्लू के कारण १७ लोगों की मौत हो चुकी है । अकेले अहमदाबाद में केसो की संख्या ६१२ पर पहुंच गई है । स्वाइन फ्लू को रोकने के लिए अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की ओर से अलग अलग कदम भी उठाये जा रहे हैं।

गुजरात सरकार द्वारा सभी सरकारी अस्पतालो में आईसोलेशन वोर्ड भी शुरु करने के साथ मरिजो को मुफ्त सारवार दी जा रही है । भारत सरकार द्वारा स्वाइन फ्लू के आंकडे जारी किये गये है । उपचार के तहत मरिजो की संख्या में भी रोकेटगति से वृद्धि हो रही है । अहमदाबाद में स्वाइन फ्लू के केसो की संख्या सबसे ज्यादा हो रही है । स्वाइन फ्लू से ग्रस्त क्षेत्रो में सुरत, वडोदरा, राज कोट, जुनागढ़, गांधीनगर शामिल है । अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन क्षेत्र में सबसे ज्यादा केस दर्ज हो रहे है ।

समुद्री क्षेत्र में परप्रांतीय नावों का चक्कर लगाना

यात्राधाम सोमनाथ मंदिर पर आतंकी हमले का खतरा

खुद वेरावल मछुआरा बोट एसोसिएशन द्वारा प्रशासन को बताया गया लेकिन प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई नही

अहमदाबाद,२५ फरवरी ।

पुलवामा आतंकी हमले के बाद अब सोमनाथ मंदिर पर आतंकी हमले का खतरा बढ़ गया है । फिलहाल में मुख्यमंत्री रुपाणी ने भी गुजरात अलर्ट होने का स्वीकार किया है । आतंकी हमले के खतरे को लेकर सोमनाथ मंदिर की सुरक्षा बढ़ा दी गई है लेकिन समुद्री क्षेत्र में आतंकी प्रवृत्ति सक्रिय हुई होने के इनपुट मिले है। खुद वेरावल मछुआरा बोट एसोसिएशन द्वारा इस मामले में दहशत व्यक्त करते हुए कहा है कि, यह समुद्री क्षेत्र में पिछले कई दिनों से परप्रांतीय नावों का चक्कर लगाना बढ़ गया है इसे स्थानीय मछुआरों या लोग नहीं पहचानते है फिर भी ऐसे असामाजिक तत्व बेखौफ रूप से हमारे समुद्र क्षेत्र में नावों को लेकर आवागमन कर रहे है । यह पूरे मामले में स्थानीय प्रशासन को बताया गया है फिर भी अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है । पुलिस, सुरक्षा एजेंसियों और स्थानीय प्रशासन की गंभीर उदासीनता और नजरअंदाज करने की नीति को लेकर अब गंभीर सवाल उठाये जा रहे हैं विशेष करके आतंकी हमला जैसी कोई घटना होगी तो इसके लिए जिम्मेदार कौन यह सवाल अब प्रशासन के लिए उठ रहे है । प्रमुख तुलसी गोहेल के साथ बात करते हुए बताया कि, समुद्र क्षेत्र में परप्रांतीय नाव २४ घंटे चक्कर लगा रहे है और इसके लोगों को कई पहचानता नहीं है । यह पूरे मामले में वेरावल मछुआरा बोट एसोसिएशन के प्रमुख तुलसी गोहेल ने बताया है कि, वेरावल बंदरगाह में अज्ञात नाव २४ घंटे चक्कर लगा रहे है, जिसके लोग यहां के नहीं है । इसे कोई पहचानता नहीं है। तथा मछली या सामान उतारने के जैसे लेन-देन करने के दौरान कोई चेक नहीं करता है। किसी एजेंसी के पास इसका रिकॉर्ड नहीं होगा। वेरावल की फिशिंग नाव की इन-आउट वोइसबुक मेइन्टेइन होती रहती है । फिशिंग में जाए यानी कि जाने की और आने की तारीख लिखने की होती है। जिसे मरीन पुलिस जांच करे या कितने दिन लेट या जल्दी आये । लेकिन अज्ञात नावों की कोई जांच नहीं करता है ।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, संपादक :- सुरेश मौर्या फोन नं. (9879141480) RNI.No. : GUJHIN/2018/75100, E-mail: krantisamay@gmail.com (subject to surat jurisdiction)